IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 20, Issue 10, Ver. I (Oct. 2015) PP 98-99
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

राजस्थान की समकालीन कला के आयाम

डॉ. गगन बिहारी दाधीच
प्राध्यापक–चित्रकला
एस. एम. बी. राजकीय महाविद्यालय
नाथद्वारा (राजस्थान)

आधुनिक कला के लम्बे दौर के बाद देष भर में कला की नवीन विचारधारा पनपी, जिसे 'समकालीन कला' का नाम दिया गया। मोटे रूप में देखे तो समकालीन आंदोलन से प्रेरित कलाकारों के रचना संसार में जहां नवीन व सामाजिक सरोकारों से जुड़े विषयों का विस्तार हुआ, वहीं कलाओं की विविध विधाओं में तकनीकि प्रयोग से कला में वैश्वीकरण से जुड़ने की भावनाएं मुखरित होती हैं।

राजस्थान की समकालीन कला में चल रहे इस रचनात्मक दौर का विश्लेषण करें तो स्पष्ट होता है कि कलाकारों ने कैन्वस के आकार प्रकार में नवीनता का प्रयास किया, रंगों को बरतने के तौर तरिकों में भी रचनात्मक प्रयोग कर समकालीन कला आंदोलन को नया रूप प्रदान किया। समीक्षा के इस क्रम में संस्थापन (इंस्टालेशन) कला का अवलोकन करें, जिसका भावस्वरूप व विषय वस्तु आदि पूर्णतः देशज तत्वों से उत्प्रेरित रहे हैं, किन्तु कलारूपों के प्रस्तुतिकरण व प्रदर्शन में वैश्वीकरण से जुड़ने का भावरूप परिलक्षित होता हैं।[1] राज्य के कलाकार कैन्वस एवं कागज के माध्यम के तहत जल रंग, तेल रंग, एक्रेलिक रंग आदि का प्रयोग कर रहे है तो शिल्प से जुड़े कलाकार माटी, पाषाण, काष्ठ, धातु व सीमेंट कंक्रीट से अपने भावरूपों को जीवन्त कर रहें हैं।

कला माध्यम – आधुनिक कला के दौर से ही कलाम माध्यमों में विविधता का भाव प्रबल बना रहा किन्तु भौतिकवादी युग एवं तकनीकों के प्रयोग से राज्य के समकालीन कलाकारों ने खुलकर प्रयोग किये। चार बाई चार इंच के कैन्वस के साथ ही वृहदाकार कैन्वस बनाऐ जा रहे हैं तथा काष्ठ, धातु, रबर व रेजिन के प्रयोग से भी राज्य के समकालीन कलाकार सृजनरत हैं।[2]

<u>विषयवस्तु</u> – पाम्परिक कलाओं में जहां विषय चयन की एक परिधि निश्चित होती है वहीं, समकालीन कलाकारों के रचना संसार में विषय विस्तार की उन्नत भावनाएं निहित होती हैं। राज्य के समकालीन कलाकारों ने पारम्परिक लघुचित्रण से भी प्रेरणा ली तो प्रकृति के विविध भावरूपों को भी जीवन्तता से संयोजित किया।[3] कई कलाकारों ने सामाजिक सरोकारों से जुड़े विषयों को मुखरित किया। ग्रामीण जनजीवन, आदिवासी संस्कृति के साथ ही राज्य के कलाकार अपनी कल्पना व मनोभावों में आकारित विषयों को भी विषयगत महत्ता प्रदान कर रहे हैं।

<u>कलाकार की रचनात्मकता</u> – राज्य के कला जगत को समृद्ध करने में एक ओर जहां कला महाविद्यालयों की भूमिका रही है, वहीं जयपुर, उदयपुर, अजमेर, कोटा, बून्दी, किशनगढ़, भीलवाड़ा स्थित कला संस्थानों का पूर्णतः योगदान रहा। देश विदेश में कला प्रदर्शनियों के साथ ही राज्य, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कला आयोजन तथा कार्यशालाएं आयोजित कर राज्य की समकालीन कला को समृद्ध किया हैं। इनमें टखमण–28, पेग, आकार, बून्दीब्रश, आज, तूलिका आदि प्रमुख हैं।[4]

रचनात्मक विवेचन के इस संदर्भ में राज्य के कलाकारों को दो भागों में बांटना श्रेयस्कर होगा। राज्य की समकालीन कला की परिधि में मुख्यतः मूर्त व अमूर्त, दोनों धाराएं समानान्तर चलती रही हैं। वरिष्ठ कलाकार व ब्लु पोटेरी विशेषज्ञ पद्मश्री कृपालसिंह शेखावत ने अपने कला रचना संसार में ढुंढात की पारम्परिक चित्र शैली को नवीन भावरूप में संयोजित किया। राज्य के वरिष्ठ कलाकार समंदरसिंह सागर का रचना संसार भी कृपालसिंह शेखावत की परम्परा का वाहक हैं। इसी क्रम में नाथुलाल वर्मा, शंकर शर्मा एवं रघुनाथ आदि भी पारम्परिक चित्रशैली से प्रेरित दिखाई देते हैं। प्रो. सुरेश शर्मा ने रंगतो की छटाओं को अमूर्तता के साथ रचा है जो इनकी चित्रशैली में परिवर्तित हुआ। ज्यामितियता व लयबद्वता के प्रति विशेष रूझान रहा हैं। अमूर्तन की इस धारा के रूप में देखें तो आर. बी. गौतम,

विद्यासागर उपाध्याय, प्रो. एल. एल. वर्मा, डॉ. सुरेश जोशी आदि की कलाकृतियाँ अमूर्तन की श्रेणी में शामिल की जाती हैं।[5]

– गौतम प्रयोगवादी अमूर्त कलाकार रहे हैं तो उपाध्याय के कला संसार में प्रकृति के अमूर्त रूपाकारों को प्रमुखता मिली हैं। इनकी श्वेत श्याम श्रृंखला बेहद चर्चित रही जिस पर इन्हे राष्ट्रीय कला पुरुस्कार भी मिला। प्रो. वर्मा एवं डॉ. जोशी दोनों अमूर्त विचारधारा से जुड़े कलाकार है किंतु दोनों के संयोजन व रंग विधान में फर्क है जो रचनाकार भी निजता को प्रदर्शित करता है। डॉ. शेल चोयल, ललित शर्मा, डॉ. युगल शर्मा, चरण शर्मा, हेमंत चित्रकार आदि ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने पारम्परिक चित्रण को सरलीकृत कर अपनी कलागत पहचान बनाई।

प्रो. हेमंत द्विवेदी, भुपेश कावड़िया, शाहिद परवेज, हेमंत जोशी, दिनेश उपाध्याय आदि ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने माध्यम में विविध प्रयोग करने के साथ–साथ अपनी निजी कला भाषा की निर्मिति भी की।[6]

समीक्षा के इस क्रम में अजमेर के प्रो. राम जैसवाल का जिक्र करें जिनके जल रंगीय दृश्यचित्र (लेण्डस्केप) देश विदेश में पहचाने जाते है। प्रो. जैसवाल की परम्परा में ही अजमेर, किशनगढ़ के कई युवा कलाकार भी सम्मिलित हुए। जिनमें वरदीचंद गहलोत, प्रो. राजीव गर्ग, डॉ. रमेश सत्यार्थी आदि प्रमुख नाम हैं। प्रो. चिन्मय मेहता की कला में पूर्ण रूप से लोक कलाकारों की इसी परम्परा को डॉ. लोकेश जैन एव आशीष श्रृंगी ने अपनी कलायात्रा प्रारंभ की। शर्मिला राठौड़, सचिन शर्मा, सुनील तिमावत, डॉ. संदीप मेघवाल, डिम्पल चाण्डोत, निर्मल यादव की कलाकृतियों में प्रयोगधर्मिता के साथ सामाजिक परिवेश परिलक्षित होता हैं।

निष्कर्ष – इस दृष्टिकोण से विवेचित समीक्षा पत्र का अध्ययन करें तो स्पष्ट होता हैं कि कलाकार मूलतः अपने सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश से ही प्रेरणा लेता है तथा उन रूप आकारों को रचनात्मक बिम्बों के साथ प्रदर्शित करता हैं।[7] राज्य के इन समकालीन कलाकारों की कलाकृतियों की विवेचना से स्पष्ट होता है कि हर कलाकार की अपनी शैलीगत भाषा मुखरित हुई हैं। यह कला भाषा ही रचनाकार की मौलिक पहचान मानी जाती हैं।

यह भी विवेचित है कि पुराने कलाकारों की भांति समकालीन कलाकार माध्यम विशेष अथवा विषय विशेष की संकुचित परिधि में नहीं बंधे, बल्कि बदलते समय के साथ अपने कलारूपों में वैविध्यता का संयोजन किया। यही नहीं, अपनी कलाकृतियों में मिश्रित माध्यमों का प्रयोग कर तकनीकि पक्ष को भी अहमियत प्रदान की। वैश्वीकरण के इस दौर में यह भी स्पष्ट होता है कि राज्य का समकालीन युवा कलाकारों की वैचारिकता अन्तर्राष्ट्रीय कला जगत तक विस्तारित हो रही हैं।

संदर्भ–

1. समकालीन कला, ललित कला अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली 2001, पृष्ठ 39
2. आकृति, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष 1998, पृष्ठ 13 से 17
3. कला मंथन, पश्चिम क्षैत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर, वर्ष 2003, पृष्ठ 16
4. शुक्ल प्रयाग, कला के आयाम, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली–1999, पृष्ठ 18 एवं 47
5. कला वार्ता, मध्यप्रदेश शासकीय प्रकाशन, भोपाल, 1993, पृष्ठ 7 एवं 9
6. राजस्थान पत्रिका, कला संस्कृति संस्करण, जयपुर, 2007, पृष्ठ 11–12
7. जनसभा, वार्षिक प्रकाशन, नई दिल्ली 2005, पृष्ठ 22 एवं 27